



अभ्यास पत्रक

पाठ – आत्मत्राण

नाम :- कक्षा :- अवधि :- अनुक्रमांक :- प्राप्तांक :-

1. पद्यांश पढ़िए और उत्तर दीजिए – (3 अंक)

“विपदाओं से मुझे बचाओ, यह मेरी प्रार्थना नहीं

केवल इतना हो (करुणामय)

कभी न विपदा में पाऊँ भया”

1. कवि किससे प्रार्थना कर रहा है और किस प्रकार की प्रार्थना नहीं कर रहा है?

उत्तर -
.....

2. कवि विपदा में किस गुण की माँग कर रहा है?

उत्तर -
.....

3. ‘करुणामय’ शब्द का प्रयोग किसके लिए किया गया है और क्यों?

उत्तर -
.....

2. Assertion-Reason आधारित प्रश्न – (2x1=2 अंक)

4. कथन: कवि ईश्वर से कष्टों को कम करने की प्रार्थना करता है।

कारण: कवि कठिनाइयों से भागना चाहता है।

(क) A: सही, R: सही और R कथन की सही व्याख्या है।

(ग) A: सही, R: गलत

(ख) A: सही, R: सही पर R कथन की व्याख्या नहीं है।

(घ) A: गलत, R: सही

5. कथन: कवि चाहता है कि दुखों के समय भी उसके मन में ईश्वर के प्रति कोई संशय न आए।

कारण: कवि ईश्वर पर अटूट विश्वास रखता है।

(क) A: सही, R: सही और R कथन की सही व्याख्या है।

(ग) A: सही, R: गलत

(ख) A: सही, R: सही पर R कथन की व्याख्या नहीं है।

(घ) A: गलत, R: सही

3. बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs) – (5x1=5 अंक)

6. ‘आत्मत्राण’ कविता के कवि कौन हैं?

(क) रामधारी सिंह दिनकर

(ख) हरिवंश राय बच्चन

(ग) रवीन्द्रनाथ ठाकुर

(घ) सुमित्रानंदन पंत

7. कविता में ‘त्राण’ का क्या अर्थ है?

(क) पीड़ा

(ख) तसल्ली

(ग) बचाव

(घ) सहायता

8. कवि किससे दुखों को दूर करने की अपेक्षा नहीं करता?

(क) मित्र से

(ख) समाज से

(ग) स्वयं से

(घ) ईश्वर से

9. कवि विपत्ति के समय क्या नहीं चाहता?

(क) सहायता

(ख) भय

(ग) विजय

(घ) साहस



10. कविता का बंगला से हिंदी रूपांतरण किसने किया?

(क) भवानी प्रसाद मिश्र

(ख) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

(ग) आचार्य रामचंद्र शुक्ल

(घ) आचार्य हरीप्रसाद द्विवेदी

4. लघु उत्तरीय प्रश्न (प्रत्येक 2 अंक, कुल 6 अंक)

11. कवि विपत्ति से बचने की बजाय किस बात की प्रार्थना करता है?

उत्तर -

12. कवि के अनुसार सुख के दिनों में भी हमें किस बात को नहीं भूलना चाहिए?

उत्तर -

13. कवि के अनुसार जब संसार हमें वंचित कर दे तब भी हमारे मन में क्या भाव होना चाहिए?

उत्तर -

5. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न – (4 अंक) (उत्तर 100–120 शब्दों में दीजिए)

14. “आत्मत्राण” कविता आत्मविश्वास और साहस की प्रेरणा देती है – इस कथन की पुष्टि कीजिए।

उत्तर -

6. निबंधात्मक प्रश्न – (5 अंक) (उत्तर 160–180 शब्दों में दीजिए)

15. “मनुष्य को सुख-दुख की परिस्थितियों में समान रूप से ईश्वर के प्रति श्रद्धा रखनी चाहिए” – स्पष्ट कीजिए।

उत्तर -



उत्तर कुंजी

1. कवि ईश्वर से प्रार्थना कर रहा है कि वह विपत्तियों से बचाने की नहीं, साहस देने की प्रार्थना करता है।
2. वह विपत्ति में भयमुक्त रहने की शक्ति चाहता है।
3. 'करुणामय' शब्द ईश्वर के लिए प्रयुक्त हुआ है, जो दया से परिपूर्ण हैं।
4. (घ)
5. (क)
6. (ग)
7. (ग)
8. (घ)
9. (ख)
10. (घ)
11. कवि विपत्ति से बचने की बजाय विपत्तियों को सहने की शक्ति चाहता है। वह कहता है कि चाहे दुख मिले, लेकिन मैं उसे सह सकूँ, ऐसा बल और साहस दो।
12. कवि के अनुसार सुख के दिनों में भी हमें ईश्वर को नहीं भूलना चाहिए। हमें हर क्षण उनका स्मरण करते रहना चाहिए चाहे वह समय कैसा भी हो।
13. कवि कहता है कि जब पूरी दुनिया हमारा साथ छोड़ दे और हमसे वंचित कर दे, तब भी हमारे मन में ईश्वर के प्रति कोई संशय या संदेह नहीं होना चाहिए।
14. 'आत्मत्राण' कविता में कविगुरु रवीन्द्रनाथ ठाकुर साहस और आत्मबल की भावना को उजागर करते हैं। वे ईश्वर से यह नहीं माँगते कि उन्हें विपत्ति से बचाया जाए, बल्कि यह प्रार्थना करते हैं कि जब दुख आए तो वे भयभीत न हों। वे कहते हैं कि दुख के समय ईश्वर उन्हें इतनी शक्ति दें कि वे डटकर उसका सामना कर सकें। कवि के अनुसार यदि संसार में कोई सहायता न मिले, तब भी उसका आत्मबल कम नहीं होना चाहिए। यह कविता हमें यह सिखाती है कि आत्मबल, धैर्य और ईश्वर पर विश्वास ही मनुष्य का सबसे बड़ा सहारा होता है।
15. 'आत्मत्राण' कविता का मूल संदेश यही है कि मनुष्य को हर स्थिति में ईश्वर पर विश्वास बनाए रखना चाहिए – चाहे वह सुख हो या दुख। कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ईश्वर से यह प्रार्थना नहीं करते कि वे उन्हें कष्टों से दूर रखें, बल्कि यह माँग करते हैं कि वे उन्हें इतनी शक्ति दें कि वे सभी दुखों का सामना निर्भय होकर कर सकें। वे चाहते हैं कि सुख के समय वे घमंड में न आएँ और ईश्वर को न भूलें तथा दुख के समय उनका आत्मविश्वास और ईश्वर के प्रति श्रद्धा कम न हो। कवि के अनुसार यदि हम संसार से वंचित हो जाएँ, सहायता न मिले, तो भी हमारे मन में ईश्वर के प्रति कोई संदेह न हो। यह कविता मनुष्य को आत्मबल, सहिष्णुता और श्रद्धा का पाठ पढ़ाती है।